वियना, ऑस्ट्रिया में 7-8 सितंबर 2021 के दौरान आयोजित संसदों के अध्यक्षों का पाँचवाँ विश्व सम्मेलन में भाषण

"विषय: कोविड-19 महामारी से उपजे चुनौतियों का सामना करने के लिए विश्व स्तर पर की गई कार्रवाई व जनता की सहायता करने में बहुपक्षवादी कार्यनीति की सफलता।"

आज पूरा विश्व कोविड-19 महामारी से संघर्ष कर रहा है। वर्तमान समय में इस महामारी से मुकाबला करना वैश्विक एजेंडे की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सभी देशों ने इसके प्रभाव को कम करने के लिए आवश्यक उपाय किए हैं।

परंतु कोविड के अनुभवों ने हमें सिखाया है कि कोई भी राष्ट्र, चाहे कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, इस चुनौती का अकेला समाधान नहीं निकाल सकता है।

हमें एक दूसरे से सीखना होगा और अपनी Best Practices के बारे में एक दूसरे का मार्गदर्शन भी करना होगा। इस समस्या ने हमें वैश्विक अंतर-निर्भरता के प्रति जागरुक किया है तथा बहुपक्षवाद पर आधारित विकास नीति और परस्पर सहयोग का रास्ता दिखाया है।

साथियों, भारत सदियों से वसुधैव कुटुंबकम की भावना से पूरे विश्व को एक परिवार मानता रहा है। बहुपक्षवाद हमारी संस्कृति, संस्कार और सोच का हिस्सा है।

इसीलिए इस महामारी की शुरुआत से ही भारत इस लड़ाई में अपने सभी अनुभवों, विशेषज्ञता और संसाधनों को वैश्विक समुदाय के साथ साझा करने के लिए प्रतिबद्ध रहा है।

भारत ने इस आपदा से निपटने के लिए 'टेस्ट, ट्रैक आइसोलेट एवं ट्रीट' की रणनीति के साथ सभी राज्य सरकारों, देश की सभी लोकतांत्रिक संस्थाओं और समाज के सभी लोगों के साथ मिलकर काम किया है।

कोविड-19 महामारी के प्रसार को रोकने के लिए, भारत सरकार ने दुनिया का सबसे बड़ा निःशुल्क टीकाकरण अभियान शुरू किया है। भारत ने अब तक 700 मिलियन से अधिक कोविड टीके लगा दिए हैं। भारत ने अब तक एक दिन में 13 मिलियन वैक्सीन लगाने का World Record बनाया है।

इसके अलावा, अर्थव्यवस्था को पुनः व्यवस्थित करने तथा बेरोज़गारी दूर करने के लिए आर्थिक राहत पैकेज भी दिए हैं।

महामारी के अनुभव से पता चलता है कि सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को और अधिक व्यापक और मजबूत बनाने की आवश्यकता है। साथ ही रोजगार के अधिक अवसर सृजित करने तथा वैश्विक आर्थिक सुधार के लिए सभी देशों को साथ मिलकर निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता है।

साथियों, यह महामारी अभी समाप्त नहीं हुई है। आने वाले दिनों में इस वायरस के और भी खतरनाक वैरिएंट आने की संभावना है। अतः हमें इससे सामूहिक रूप से परस्पर सहयोग के साथ मुकाबला करना होगा, और अधिक संसाधन जुटाने होंगे तथा बहुपक्षीय मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाना होगा।

इन सभी प्रयासों में सभी लोकतांत्रिक देशों की संसदों की तथा निर्वाचित जनप्रतिनिधियों की अहम भूमिका होगी। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनप्रतिनिधि जनता से जमीनी स्तर पर जुड़े रहते हैं तथा जनता और सरकार के बीच सेतु का कार्य करते हैं।

अतः, आज इस अवसर पर मैं दुनिया के सभी संसदों के सभी पीठासीन अधिकारियों को आह्वान करता हूं कि कोविड-19 महामारी का मुकाबला करने के लिए हमें जनता को केंद्र में रखकर सभी के लिए एक न्यायसंगत और दूरगामी परिणाम प्राप्त करने के उद्देश्य से मजबूत कार्यनीति तैयार करनी होगी और उसका क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए संसदों को सकारात्मक भूमिका निभानी होगी। धन्यवाद।